अध्याय 37

1	प्रार्थना

समूह का अगुवा: प्रार्थना के साथ परमेश्वर के लिए शिष्य निर्माण करने के इस पाठयक्रम व समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंपे।

2	आराधना (20 मिनट) *[स्वभाव का प्रगटीकरण]* परमेश्वर की नज़दीकी व उसकी उपस्थिति का अभ्यास करना।

परिभाषा

सिखाएं। आराधना क्या है? आराधना की परिभाषाएं निम्नलिखित हैं:

आराधना: परमेश्वर के प्रति एक भय,प्रसंशा,समपर्ण और अधीनता का *भाव* है,
जिसे दैनिक जीवन की अनेकों भिन्न क्रियाओं के द्वारा *प्रगट किया* जाता है।

परमेश्वर की आराधना करने के लिए हमें यह जानना ज़रूरी है कि परमेश्वर कौन है? इस अध्याय में हम परमेश्वर की नज़दीकी व उसकी उपस्थिति का अभ्यास करने के द्वारा अपनी आराधना को प्रगट करने के बारे में सीखते हैं।

मनन ।

1. परमेश्वर सर्वव्यापी है।

भजन संहिता 139: 7-10 **पढ़ें।** परमेश्वर सच में विद्यमान है। परमेश्वर सारे जगत में मौजूद है। परमेश्वर हमारे नज़दीक है। लेकिन हम हमेशा उसकी अस्तित्व, उपस्थिति व नज़दीकी के प्रति सर्तक नहीं रहते। इसी कारण हमें परमेश्वर की नज़दीकी व उसकी उपस्थिति का अभ्यास करने की जरूरत है।

2. पूर्ण विवेक के साथ परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करें।

भजन 27:4 पढ़ें। हमें एक चीज़ की जरूरत है, हमें उसके लिए प्रार्थना करना, तथा उसकी खोज में लगे रहना चाहिए। और वह एक वरदान यह है कि हम जीवन भर परमेश्वर के भवन में रहने पाएं और यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहें।

हम इस कार्य को व्यवहारिक तौर पर किस प्रकार करते हैं?

- अपनी प्रार्थना और आराधना को थोड़े समय के लिए शान्त रहकर प्रारम्भ करें। उस शान्त समय में अपने आपको याद दिलाएं कि परमेश्वर पास में ही मौजूद है। पूरे समर्पण व विवेक के साथ परमेश्वर की नज़दीकी व उसकी उपस्थिति में प्रवेश करें।
- परमेश्वर की मनोहरता पर ध्यान लगाते व मनन करते हुए लगातार आराधना और प्रार्थना करते रहें। परमेश्वर की मनोहरता में परमेश्वर की विशेषताएं व गुण जैसे, उसकी शक्ति, पवित्रता,धार्मिकता,दया,प्रेम, विश्वासयोग्यता आदि शामिल थे। परमेश्वर को इन विशेषताओं में से एक पर विचार करें। होने दें कि पवित्र आत्मा बाइबल के पन्नों से आप पर परमेश्वर की विशेषताओं को प्रगट करें। निम्नलिखित दो प्रश्नों पर मनन करें:
- परमेश्वर की इस चारित्रिक विशेषता का परमेश्वर के लिए क्या महत्व है?
- परमेश्वर की इस चारित्रिक विशेषता का आपके लिए क्या महत्व है?

3. सचेत अवस्था में परमेश्वर के साथ चलें।

भजन 16:8,11 पढ़ें।

जो काम दाऊद ने किये उन्हीं कामों को आप भी बार बार दोहराएं । दाऊद ने हमेशा परमेश्वर को अपने सम्मुख जाना। उसने हमेशा ध्यान रखा की परमेश्वर की नज़दीकी और उसकी उपस्थिति उसके साथ है।

- अपने जीवन की गतिविधियों में परमेश्वर की उपस्थिति को शामिल करने के द्वारा परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने का प्रयास करें। लोगों से बातें करते हुए परमेश्वर की चर्चा जरूर करें। अपनी योजनाओं और निर्णयों में परमेश्वर को स्थान दें। कार्य करते या अध्ययन करते हुए परमेश्वर को भी शामिल करें।
- खुद को याद दिलाएं कि परमेश्वर आपके दाहिने हाथ पर खड़ा है और वह आपकी कभी डिगने नहीं देगा। इस बात पर गहन विचार करें कि परमेश्वर के आपके दाहिने हाथ पर खड़े होने का आपके लिए क्या मायना है! वह आप पर नजरें

लगाए हुए है और सारी बातों को देखता है। उसके कान आपकी ओर लगे हैं और वह आपकी सारी बातों को सुनता है। वह आपके बारे में सब कुछ जानता है, और आपके बारे में सोचता है। वह यहां पर आपसे मिलने के लिए, आपसे बात करने, आपकी सुनने और आपको कुछ बताने के लिए यहां है। वह किसी खास मकसद से आपके पास मौजूद है।

- अगल अलग परिस्थितियों और अलग अलग समयों में परमेश्वर की उपस्थिति आपके लिए अलग मायने रखती है। कई बार परमेश्वर आपको सचेत करने के लिए तो कई बार आपको डांटने के लिए होते हैं। कई बार परमेश्वर आपको सहारा देने, चंगा करने या आपको शक्ति प्रदान करने के लिए आपके साथ हाते हैं। कई बार परमेश्वर आपको प्रेरित करने, आपको प्रोत्साहित करने के लिए, प्रेरणा देने और आपकी सहायता करने के लिए आपके पास होते हैं। कई बार वह आपको कुछ सिखाने के लिए, किसी बात को आप पर ज़ाहिर करने के लिए या आपके सामने कोई दरवाज़ा खोलने या बन्द करने के लिए होते हैं।
- हनोक व नूह परमेश्वर के साथ चले(उत्पत्ति 5:22; 6:9)। परमेश्वर ने अब्राहम को अपना मित्र कहा(यशायाह 41:8)। यीशु ने अपने चेलों को मित्र कहा(यूहन्ना 15:15)। आइये हम भी परमेश्वर की उपस्थिति व उसकी नज़दीकी में रहने का प्रयास करें।

आराधना। आइये हम 3 मिनट शान्त रहकर परमेश्वर की आराधना करें। परमेश्वर की उपस्थिति व उसकी नज़दीकी के प्रति सचेत रहने का अभ्यास करें।

3.	**बाँटना** (20मिनट)	*[एकान्त समय]* **यहोशू 1:4**

- ***आगे बढ़कर*** (या अपने नोट्स में से **पढ़ें**) संक्षेप में ***बताएं*** कि आपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (यहोशू 1-4)से क्या सीखा।
- अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुनें, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

4	**बाइबल अध्ययन** (70मिनट)	*[फलवन्त होना]* **खोज करने वाला समूह**

बहुत से तरीके हैं जिनके द्वारा मसीही लोग सुसमाचार प्रचार व शिक्षा प्रदान कर सकते हैं। व्यक्तिगत तौर पर, सामुहिक तौर पर, साहित्य के द्वारा, नाटकों के द्वारा, संगीत व चलचित्रों द्वारा, रेडियो, टेलीविजन व गीतों के द्वारा भी सुसमाचार सुनाया जाता है। लघु समूह द्वारा सुसमाचार सुनाने का एक उदाहरण खोज समूह है। इन शिक्षाओं में आप सीखेगें कि लोगों को एक छोटा समूह अपने लिए सुसमाचार के संदेशों को खोजने किसी प्रकार पर बाइबल पर एक साथ मिलकर मनन व अध्ययन कर सकते हैं।

क.सुसमाचार प्रचार करने के लिए बाइबल आधारित सिद्धान्त

खोजें व चर्चा करें। प्रत्येक बाइबल के अनुच्छेद में सुसमाचार प्रचार करने के लिए बाइबल का क्या सिद्धान्त है?

1. गैर मसीहियों के लिए प्रार्थना।

कुलुस्सियों 4:2-4; (प्रेरितों 16:14) **पढ़ें।**

ध्यान दें। लगातार अन्याजियों से सम्बन्ध रखने वाले अपनी परिवार के सदस्यों, मित्रों, सहकर्मियों व पड़ोसियों के लिए लगातार प्रार्थना करें कि परमेश्वर उन तक सुसाचार प्रचार करने का अवसर दें और उस सुसमाचार को स्वीकार करने के लिए उनके हृदयों को खोलें। प्रार्थना के द्वारा आप प्रगट करते हैं कि आप लोगों के जीवन व हृदय में काम करने के लिए पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर हैं।

2. गैर मसीहियों का जीवन ।

यूहन्ना 2:12(प्रेरितों के काम 10:38) **पढ़ें।**

ध्यान दें। गैर मसीहियों के जीवन की परिस्थितियों में शामिल होकर उनके प्रति अपनी रूची को बढ़ायें। भविष्यद्वक्ताओं, यीशु मसीह और प्रेरितों ने भी यही किया था। उन लोगों के बीच में रहकर एक आदर्श जीवन व्यतीत करें, उनके जीवन व जीवन

से जुड़ी सारी गतिविधियों में भागीदार हों, उनकी कठिनाइयों व उनकी रूची बांटें तथा उनमें व्यक्तिगत तौर पर रूची लें। उन्हें अपनी जिन्दगी को नज़दीक से व लम्बे समय तक देखने की अनुमति प्रदान करें। आपके जीवन की विशेषता, आपका भरोसेमन्द होना, आपकी विश्वासयोग्यता, वफादारी, मिलनसार होना, सहायक होना, व्यक्तिगत रूची व प्रेम मसीह के लिए उनकी नफरत व उस पर भरोसा न करन को दूर करके मसीह के साथ नज़दीकी रिश्ता बनाने में सहायता कर सकते हैं।

3.अपनी जीवन में गैर-मसीहियों को शामिल करें।

यूहन्ना 1:38-39(प्रेरितों 10:24,27) **पढ़ें।**

ध्यान दें।

अपने दैनिक जीवन में गैर मसीहियों को शामिल करने के द्वारा उनकी रूची बढ़ाएं। अपने घर में ही एक आदर्श जीवन व्यतीत करें, गैर मसीहियों के लिए अपने घर को खोलें, उन्हें यह देखने का अवसर प्रदान करें कि "मसीही कौन हैं" तथा मसीही लोग क्या करते हैं, और दूसरे मसीहियों के साथ आपकी गतिविधियों में आप इन्हें भी शामिल कर लें। गैर मसीहियों को लम्बे समय तक आपके व्यक्तिगत जीवन को नज़दीकी से देखने की अनुमति दें, और उन पर यह ज़ाहिर करें कि परमेश्वर व दूसरे विश्वासियों के साथ सम्बन्ध बनाना सम्भव है और इन सम्बन्धों का आप पर व आपके परिवार पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अपने प्रचार का स्वयं अभ्यास करने से आपका संदेश और भी ज़्यादा शक्तिशाली बन जाता है।

4.गैर मसीहियों के साथ बैठकर बाइबल पढ़ें या अध्ययन करें।

रोमियों 10:14-17; प्रेरितों 8:30-31; 17:2-4 **पढ़ें।**

ध्यान दें। विश्वास सुनने से आता है और सुनना मसीह के वचन से होता है। किसी को विश्वास में आने के लिए, सुसमाचार की उदघोषणा, शिक्षा और सुसमाचार को बांटा जाना बहुत ज़रूरी होता है। गैर मसीहियों को आपके साथ मिलकर बाइबल को पढ़ने और बाइबल में से खोज़बीन करने की अनुमति प्रदान करें। इस तरीके से उन्हें सुसमाचार की समझ और ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

तरीका । उदाहरण के लिए, बाइबल की खोज बीन करने वाले समूह का निर्माण करें; कुछ महीनों या साल भर तक सप्ताह में एक बार ऐसा कर सकते हैं। इस तरीके में प्रेरितों 17 के निम्न तत्व शामिल किये जा सकते हैं:"सवाल-जवाब', 'व्याख्या' और 'साबित करना'।

- सवाल जवाब करने का अर्थ *बाइबल के किसी अनुच्छेद पर चर्चा करना है।* इसका अर्थ बहस करने या वाद विवाद करने से नहीं है।
- व्याख्या का अर्थ (शिक्षा द्वारा) *बाइबल के कठिन भाग को पूरी तरह समझाना।*
- साबित करने का अर्थ *बाइबल के अन्य हवालों द्वारा प्रमाण व तथ्य प्रदान करना है* खास तौर पर,परमेश्वर,मसीह तथा यीशु की मृत्यु और पुनरूत्थान से सम्बन्धित प्रमाण व तथ्य।

लक्ष्य। खोजबीन करने वाले समूह का लक्ष्य बाइबल से परमेश्वर,मनुष्य और जीवन से सम्बन्धित सत्यों की खोज करना है।

शीर्षक। गैर मसीहियों की यह जानने में सहायता करें कि बाइबल इन विषयों पर क्या कहती है, खास तौर पर निम्नलिखित विषयों पर:

- परमेश्वर कौन है और वह हम से किस तरह रिश्ता बनाना चाहता है?
- यीशु मसीह कौन है,उसने धरती पर रहते हुए क्या किया और वह अभी क्या कर रहा है?
- परमेश्वर के बिना जीवन किस प्रकार का होता है और वह मनुष्य को किस ओर ले जाता है?
- परमेश्वर के साथ जीवन किस प्रकार का होता है और वह जीवन हमें किस ओर ले जाता है?
- कोई व्यक्ति किस प्रकार परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध बना सकता है?

5. होने दें कि गैर मसीही लोग अपने आप सत्य की खोज करें?

लूका 10:25-28;(प्रेरितों के काम 17:11)**पढ़ें** ।

ध्यान दें। गैर मसीहियों को अपने आप ही बाइबल की सच्चाईयों को तलाशने दें। प्रश्न पूछने के द्वारा तथा बाइबल से पढ़े गये खण्ड के मतलब को समझने में तथा उस वचन को लिखने के अभिप्राय को समझाने के द्वारा भी आप इस कार्य को कर सकते हैं। इस तरह से सत्य उन पर गहरा प्रभाव डालेगा तथा वह उसे बेहतर ढंग से समझ पाएंगे।

6. गैर मसीहियों को अपनी ज़रूरतों के बीच में इन सच्चाईयों को समझने दें।

लूका 4:18-19;(1 कुरिन्थियों 9:19-23)

ध्यान दें। गैर मसीहियों को उनके जीवन से मेल खाने वाली परिस्थितियों में होकर बाइबल की सच्चाईयों की खोज करने दें। जिन बातों को लोग अपने जीवन की जरूरत समझते हैं वे एक दूसरे से अलग होती हैं।

- *कई लोगों की शारीरिक ज़रूरतें होती हैं।* वे बीमार या विंकलाग, थके हुए, भूखे, गरीब,दवाब में या सताव में हो सकते हैं।
- *कई लोगों के पास भावनात्मक जरूरतें होती हैं।* वे अपने आप में असुरक्षित महसूस करते हैं, कुछ लोग अपनी पहिचान खो चुके हैं,वे अपने आप को पसन्द नहीं करते, वे भावनात्मक तनाव में जीवन व्यतीत करते हैं या उनके हृदय में गहरे घाव होते हैं।
- *सभी लोगों की अपनी आत्मिक ज़रूरतें होती* हैं। वे दोष या लज्जा पूर्ण भूतकाल या वर्तमान से परेशान होते हैं, उनका मन किसी के प्रति नफरत व कड़वाहट से भरा हुआ है,वे परमेश्वर के विरूद्ध बलवा करते हैं और पूरी तरह से गुमराह हैं।
- *कई लोगों की जरूरतें उनके व्यवहार से जुड़ी होती हैं।* वे बुरी आदतों या रिश्तों के शिकार हैं, जिनके द्वारा असल में वे सन्तुष्टी को पाना चाहते थे या वे अब किसी प्रकार नये सम्बन्ध बनाने के प्रति अति उदासीन हैं। उन्हें बताएं कि बाइबल में प्राप्त सच्चाईयों को किस प्रकार उनकी विशेष परिस्थितियों में इस्तेमाल किया जा सकता है।

7. गैर मसीहियों की सच्चाई को उनके जीवन से जोड़ने में सहायता करें।

मरकुस 1:14-15; (प्रेरितों 3:19; 2 कुरिन्थियों 6:1-2) **पढ़ें**।

ध्यान दें। गैर मसीहियों को बाइबल की सच्चाई को उनके जीवन से जोड़ने हेतू उत्साहित करें। उन्हें बाइबल के संदेश का प्रतिउत्तर देने की चुनौति दें। उन्हें यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत प्रभु व उद्धारकर्ता स्वीकार करने का अवसर व आमन्त्रण प्रदान करें। परमेश्वर ने बाइबल हमें केवल अपने मन को सन्तुष्ट करने के लिए नहीं, वरन हमारे जीवन को बदलने के लिए दी है। इस प्रकार की गतिविधी सामुहिक वार्तालाप के दौरान नहीं की जाती, वरन यह काम सभा समाप्त होने के बाद व्यक्तिगत तौर पर मिलकर किया जाता है।

ख. खोजबीन करने वाला समूह छोटे समूह में सुसमाचार सुनाने का एक तरीका है।

खोजबीज करने वाले समूह को व्यवहारिक तरीके **सिखाएं।**

1. स्थान, माहौल व गतिविधियां

स्थान। एक साथ जमा होने के लिए घर, एक छोटा कमरा या बाहर कहीं उपयुक्त स्थान का चुनाव करें।

आकार। सभा को आकार में छोटा ही बना रहने दें अर्थात ज़्यादा से ज्यादा चार जोड़ें(एक जोड़े में एक मसीही और उसका गैर मसीही मित्र होता है)।

तरीका। गतिविधियां अव्यवस्थित व अनौपचारिक ही रहें। इसलिए बेहतर रहेगा कि हम इस मिलन में परम्परागत मसीही कार्यक्रम जैसे प्रचार,गीत गाना या प्रार्थना करने को दूर ही रखें। खोजबीन करने वाले इस समूह के मिलने का केवल एक ही मकसद, बाइबल पढ़ना और उस पर चर्चा करना है। हो सकता है कि कुछ स्थानों या संस्कृतियों में गीत गाना या प्रार्थना को समावेशित करना उपयुक्त व सहायक हो। लेकिन दूसरे स्थानों या संस्कृतियों में गीत गाना या प्रार्थना करना लोगों को भयभीत करके मुख्य उद्देश्य से दूर ले जा सकता है, जो वास्तव में अपने आप बाइबल की सच्चाई को तलाशना है। मसीहियों पर सताव करने वाले देशों में, गीत गाना,प्रचार करना या ज़ोर ज़ोर से प्रार्थना करना शत्रुओं को अपनी ओर आकर्षित करती है। इस अवस्था में छोटे समूहों धीमी आवाज़ में बात करना चाहिए ताकि घर के बाहर के लोगों को बिल्कुल भी भीतर की गतिविधो के बारे में पता न चल सके। ऐसी परिस्थिति में कभी भी न तो एक साथ मिलकर आएं और न ही वहां से एक साथ जाएं वरन एक एक या दो दो करके आएं और जाएं। स्वयं चुनाव करें की आपकी परिस्थिति में कौन सा तरीका बेहतर है।

पृष्ठभूमि। सुरक्षित व अति आधुनिक परिस्थिति में, सामुहिक चर्चा से पहले व बाद में कोई भी मधुर संगीत को बजा सकते हैं। यदि सही लगे तो, चर्चा से पहले व बाद में चाय या पेय जल वितरित किया जा सकता है।

समयः समूह के अगुवे को समय का ध्यान रखना चाहिए चाहे चर्चा का समय 60,90 या 120 मिनट का रखा गया हो, अगुवा समय पर शुरू करे व समय पर चर्चा को समाप्त करे। यह बात आधुनिक समाज में बहुत मायने रखती है, जहां पर लोगों को पढ़ना पढ़ता है और उनके अन्य काम भी होते हैं।

2. एक मसीही व एक गैर मसीही मिलकर एक जोड़ा बनता है।

आमन्त्रण। जब कुछ मसीहियों का समूह मिलकर सप्ताह में एक बार खोजबीन करने वाले समूह को कुछ माह के लिए चलाने का निर्णय लेते हैं, तो वे अपने किसी गैर मसीही मित्र को इस समूह में बुलाने का प्रयास करते हैं।

उद्देश्य। लोगों को अवश्य बताएं कि इस सामुहिक चर्चा का उद्देश्य बाइबल पर आधारित परमेश्वर, मनुष्य और जीवन से सम्बन्धित सच्चाईयों को खोजना और उन पर चर्चा करना है।

साथ मिलकर। मसीही जन को सभा के दौरान अपने गैर मसीही मित्र के साथ रहना चाहिए, उसके साथ बैठें, खोजबीन करते समय उसके ही समूह में शामिल हों और अन्त में एक साथ ही वापस जाएं।

3. परिचय।

समूह का अगुवा सबका स्वागत करता है। हर एक जन अपना परिचय देते हैं(केवल अपना नाम, पढ़ाई या अपने काम के बारे में बताएं)। समूह को अगुवा सबके जमा होने के उद्देश्य को तथा खोजबीन व चर्चा करने के तरीके के बारे में वर्णन करता है जो निम्नलिखित है:

उद्देश्य। खोजबीन करने वाले समूह का उद्देश्य बाइबल पर आधारित परमेश्वर, मनुष्य और जीवन से सम्बन्धित सच्चाईयों को खोजना और उन पर चर्चा करना है।

पढ़ना। हम बाइबल से एक अध्याय या खण्ड को दो बार पढ़ेगें: पहले एक साथ मिलकर और फिर शान्त अवस्था में अपने आप। पहले घेरे में बैठा प्रत्येक जन एक एक पद जोर से तब तक पढ़ता है जब तक कि वह अनुच्छेद समाप्त नहीं हो जाता। उसके बाद हर एक जन अपने आप उस अनुच्छेद को शान्ति के साथ पढ़ता है।

प्रश्न। तीन या चार प्रमुख प्रश्न हैं, हम लोग पहले दो लोगों के समूह में उन प्रश्नों पर सामुहिक चर्चा करेगें।

चर्चा। उसके बाद हम अपनी खोज पर चर्चा करेगें और अपने समूह के भीतर ही प्रश्न का स्पष्ट करने का प्रयास करेंगें।

सरांश। अन्त में उस चर्चा को सार बताया जाएगा।

4. बाइबल पढ़ना।

बाइबल का अनुवाद। हर एक जन को एक ही प्रकार की बाइबल का इस्तेमाल करना चाहिए। आप चाहें तो उसी बाइबल के अनुच्छेद की फोटोकॉपी भी करा सकते हैं। बाइबल वितरित करें ताकि मसीही व गैर मसीहियों से बने प्रत्येक छोटे समूह में सभी लोगों के पास बाइबल हो।

साथ मिलकर पढ़ें। सभी लोगों को बाइबल का अध्याय या अनुच्छेद मिल जाने के बाद, लोगों के घेरे का प्रत्येक जन अनुच्छेद खत्म हो जाने तक एक एक वचन को ज़ोर से पढ़े।

अकेले पढ़े। उसके बाद, हर एक जन से इसी अध्याय या अनुच्छेद को एक बार फिर से अपने आप पढ़ने के लिए कहें।

5. खोजबीन करने वाले समूह में इस्तेमाल किये जाने वाले प्रश्नों के उदाहरण।

अगुवे को ऐसे प्रश्नों को इस्तेमाल करना चाहिए जिससे लोगों को उस बाइबल खण्ड में पाये जाने वाले सत्य को खोजने में सहायता मिल सके। नीचे दिये गये प्रश्न केवल उदाहरण है हर एक अनुच्छेद या अध्याय के लिए अलग तरीके से प्रश्न पूछे जाने चाहिए। समूह का अगुवा प्रत्येक अध्याय के लिए तीन या चार प्रमुख प्रश्नों को तैयार करे, नीचे दिये गये तीन समूहों के प्रश्नों में से कम से कम एक को जरूर लिया जाए:

समूह 1.“ यीशु मसीह क्या करते?” जैसे प्रश्न। उदाहरण के लिए:

- यीशु ने लोगों और व्यक्ति विशेष में किस प्रकार की रूची दिखाई?
- यीशु ने लोगों की जरूरतों को समझने के लिए अपनी समय का परिचय कैसे दिया?
- यीशु का स्वभाव उसके समय के अन्य लोगों की तुलना में किस प्रकार से भिन्न था?
- यीशु ने जीवन की विशेष समस्या का समाधान किस प्रकार से किया? समस्याएं जैसे, अज्ञानता,बीमारी, पक्षपात, आलोचना, हठीलापन, स्वार्थीपन,विरोध,मृत्यु इत्यादि।
- यीशु ने लोगों की सहायता करने की अपनी योग्यता को किस प्रकार प्रगट किया?

- यीशु ने जीवन की विशेष परिस्थितियों पर अपने अधिकार को किस प्रकार प्रगट किया?
- यीशु द्वारा किये जाने कार्यों का यहां पर क्या अभिप्राय है?
- इस स्थान पर यीशु द्वारा कही गयी बातों को क्या अर्थ है? या उसने ऐसा क्यों कहा?
- उसने इस विशेष काम को यहां पर क्यों किया? उदाहरण के लिए, यीशु मसीह इस दुनिया में क्यों आए?
- यीशु मसीह की बातों व कार्यों के द्वारा हम मानवीय स्वभाव व जीवन के बारे में क्या सीखते हैं?

समूह 2. "यीशु मसीह कौन है?" किस्म के लोग। उदाहरण के लिए:

- यह अनुच्छेद उसके व्यक्तित्व की कौन सी अनोखी विशेषता को प्रगट करता है?
- यीशु मसीह अपने विषय में क्या दावा करते हैं?
- जब यीशु मसीह ने कहा कि वह (उदाहरण के लिए)"जगत की ज्योति है" या "जीवन की रोटी है", तो उसका क्या अभिप्राय था?
- लोग यीशु मसीह के बारे में क्या सोचते हैं?
- किसी पुराने नियम के विशेष भविष्यद्वक्ता ने यीशु के बारे में सैंकडों वर्ष पूर्व क्या कहा था?
-

समूह 3. "लोग यीशु मसीह के साथ किस प्रकार व्यक्तिगत सम्बन्ध बना सकते हैं?" किस्म के प्रश्न। उदाहरण के लिए:

- यीशु मसीह हम से किस प्रकार का रिश्ता बनाना चाहते हैं? अलग अलग लोगों ने किस प्रकार यीशु मसीह की शिक्षाओं और उसके कार्यों का प्रतिउत्तर दिया? यीशु मसीह के कथन के अनुसार किसी व्यक्ति को उसके साथ सम्बन्ध बनाने के लिए क्या करना चाहिए? यीशु मसीह हम से क्या चाहते हैं? विश्वास करने वाले व्यक्ति के जीवन में किस प्रकार का परिवर्तन हुआ?
- एक विश्वासी यीशु मसीह के साथ सम्बन्ध बनाने के बाद किस पकार के अनुभव की अपेक्षा कर सकता है?
- यीशु मसीह के साथ सम्बन्ध बनाने के क्या परिणाम होते हैं?
- यीशु मसीह के साथ सम्बन्ध बनाने से इनकार करने के क्या परिणाम होगें?
- यीशु मसीह पर विश्वास न करने के लिए लोग किस तरह के तर्क पेश करते हैं?
- "विश्वास करने" या "यीशु मसीह को अपने हृदय और जीवन में बुलाने" का क्या अर्थ है?
- व्यवहारिक तौर पर (उदाहरण के लिए) कोई व्यक्ति कैसे "यीशु को अपने हृदय व जीवन में स्वीकार करता है"?

6. खोज व चर्चा

आपसी बातचीत। प्रेरितों के काम 17 के अनुसार एक खोजबीन करने वाले समूह की विशेषताएं पढ़ना, चर्चा करना, व्याख्या करना तथा साबित करना होती हैं। लोगों को निर्णय लेने में सहायता करने के लिए कभी प्रचार,शिक्षा या चुनौतियों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। खोजबीन करने वाले समूह की विशेषता होती है कि उसमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से गुणवत्तापूर्ण वार्ता करता है, यह कोई भाषण नहीं है जिसमें वक्ता बोले और सारे श्रोतागण बैठकर उनकी सुनें।

अपने आप खोजने दें। खोजबीन करने वाला समूह लोगों की बाइबल के सत्यों को अपने आप खोजने में सहायता करता है। इस कारण छोटे समूह (मसीही जन व उसके गैर मसीही मित्र वाले समूह में) में खोज व चर्चा के दौरान, मसीही जन ने अपने मित्र से स्वयं मूल्यांकन करने के बाद निर्णय लेने के लिए कहना चाहिए। मसीही जन चाहे तो उससे इस परिस्थिति में कुछ निम्न पकार के प्रश्न कर सकता है:

"यहां पर हम प्रश्न से जुड़े हुए किन तथ्यों को पाते हैं?"

"आपके विचार से इसका क्या मतलब है"?

"इन तथ्यों को हम अपने जीवन से किस प्रकार जोड़ सकते हैं"?

अगुवे का काम चर्चा को संचालित करना है। समूह के अगुवे की भूमिका बाइबल शिक्षक की बजाय एक अध्यक्ष या इस चर्चा के संचालक के रूप में है।

परिचय देने व बाइबल पढ़ने के बाद, वह पहले प्रमुख को पूछता है।
मसीही जन व गैर मसीहियों वाला यह छोटा समूह,पाँच मिनट के भीतर तथ्यों को खोजने व प्रश्न पर चर्चा करने की कोशिश करते हैं।
उसके बाद समूह का अगुवा उस निष्कर्ष को सारे समूह में आकर बताता है। वह लोगों को अपनी प्रारम्भिक खोज व अपने दृष्टिकोणों को समूह के सामने रखने के लिए उत्साहित करने के द्वारा,तथा उनसे पूछने के द्वारा कि क्या उनके पास कोई और प्रश्न है या वे किसी विषय पर अधिक चर्चा करना चाहते हैं ,पूरे समूह की अगुवाई करता है। वह सारे समूह का ध्यान खोजी गयी सच्चाई की ओर आकर्षित करना चाहता है। वह लोगों के सभी प्रश्नों को गम्भीरता से लेता है, लेकिन कभी अपने मुख्य विषय से नहीं भटकता। जब सहायक लगे, तो वह कठिन परिस्थितियों के लिए अपने जवाब दे सकता है या सभा के बाइ में उन सवालों के जवाब दे सकता है।
लगभग 10 मिनट तक चर्चा करने के बाद, समूह का अगुवा उपस्थित लोगों के दृष्टिकोणों की सहायता से इस प्रश्न के उत्तर का निचोड़ बताता है। तत्पश्चात वह दूसरा प्रमुख प्रश्न पूछता है।
इस प्रक्रिया को करीब तोन या चार बार दोहराने के बाद,खोजबीन की सामुहिक सभा के अन्त में, समूह का अगुवा सारी खोजों के सार को सबके सामने रखता है, हो सकता है वह इस काम के लिए श्वेत पट पर कुछ चित्रों को भी इस्तेमाल करे। लेकिन उस चित्र या दृष्टान्त द्वारा उस सत्य का उल्लेख होना चाहिए जिसे समूह ने उस विशेष अध्याय या अनुच्छेद में ढूंढ़ा था।

7. खोजबीन करने वाली सभा के बाद का समय।

आमन्त्रण। समूह का अगुवा कहता है,"यह खोजबीन करने वाली सामुहिक सभा का अन्तिम सप्ताह है। कृपया अगले सप्ताह ज़रूर से आइये। हमारा खोजबीन का समूह फलां फलां समय पर फलां फला स्थान में जमा होता है। यदि आपने किसी के साथ जाने या किसी काम को करने का वायदा कर दिया है, तो आप जाने के लिए स्वतन्त्र हैं। लेकिन अगर आप बैठकर बात करना चाहते हैं तो चाय ज़रूर से पियें।"

सम्पर्क बनाएं रखें। वे मसीही जन, जो अपने साथ गैर मसीही मित्रों को खोजबीन की सामूहिक सभा में लाए थे, उनसे दूसरे उपलक्ष्यों या परिस्थितियों में भी मिलने का समय निकालें। हो सकता है कि उन्हें इन उपलक्ष्यों में बाइबल की सच्चाई पर चर्चा करने का अवसर मिल जाए।
सुसमाचार के प्रति उसकी समझ पर ध्यान दें। जैसे ही आपको लगे कि आपका गैर मसीही मित्र यीशु मसीह को अपने जीवन का प्रभु और उद्धारकर्ता स्वीकार करने के लिए तैयार है तो आप उसके मसीही मित्र को इस बात को लेकर सुनिश्चित हो जाना चाहिए कि उसके गैर मसीही मित्र को सुसमाचार समझ में आ गया हो। लोगों के योशु को अपने जीवन में स्वीकार करने के तरीके अलग हो सकते हैं। कई बार यीशु मसीह को स्वीकार करने में सहायता करने के लिए उसके साथ प्रार्थना करना सहायक प्रतीत होता है। लेकिन कई बार केवल सुसमाचार के बारे में उसकी समझ को लेकर प्रश्न पूछना ही काफी ठहरता है।
सुसमाचार पर ही ध्यान केन्द्रित करें। खोजबीन करने वाला समूह सुसमाचारकीय बाइबल अध्ययन व प्रत्येक सभा अपने आप में एक सम्पूर्ण कार्यक्रम है। कुछ गैर मसीही मित्र केवल एक ही बार आएंगे, लेकिन कुछ लोग कभी आएंगे लेकिन कुछ मित्र हर बार आपको सभा में मौजूद मिलेगें। इसी लिए हर चर्चा करने वाली सभा का मुख्य उद्देश्य प्रश्नों व चर्चा के द्वारा बेहतर से बेहतर ढंग से सुसमाचार के सत्य को प्रगट करना है।

निरिक्षण करना (फौलो अप)। जब तक समूह के लोग अपने जीवन में यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार नहीं कर लेते तब लक खोजबीन करने वालो सामुहिक सभा को लगातार चलाते रहें। तत्पश्चात इन नये मसीहियों को शिष्यता के समूह(नई घरेलू संगती) में तबदील कर दें। यदि आपके पास पूर्ण समय की सेवा करने वाले मसीही कार्यकर्ता हैं तो आप इस सभा को लगातार एक वर्ष तक चला सकते हैं। कुछ कार्यकर्ता खोजबीन करने वाले समूह का संचालन करने में कार्यरत होगें तो दूसरे शिष्यता समूह में। नये मसीही जन कुछ समय के लिए खोजबीन करने वाले समूह में नियमित तौर से भाग लेकर काफी फायदा पहुंचा सकते हैं। कई परिस्थियों में शिष्यता समूह भी ठीक उसी समय और उसी स्थान पर अलग कमरे में मिल सकते हैं जहां खोजबीन करने वाला समूह मिलता है, और बाद में वे चाय पानी के लिए एक साथ संगति कर सकते हैं।

ग.खोजबीन करने वाले समूह के लिए कछ सुझावित बाइबल के अनुच्छेद

आप मत्ती,मरकुस,लूका व यूहन्ना रचित सुसमाचार के अलावा रोमियों अध्याय 3 व इफिसियों 2 जैसे अध्यायों का इस्तेमाल अपने खोजबीन करने वाले समूह के लिए कर सकते हैं। निम्नलिखित बाइबल खण्ड सामुहिक खोज के दौरा काफी लाभदायक साबित हुए हैं।

1. मत्ती 1:18 – 2:23	मसीही का जन्म
2. मत्ती 4:1-25	परिक्षाएं,शिक्षा,प्रचार, चंगा करना
3. मत्ती 5:1-48	आशीषें,नमक और ज्योति, व्यवस्था
4. मत्ती 6:1-	देना,प्रार्थना, उपवास,धन, चिन्ता
5. मत्ती 7:1-29	न्याय करना, प्रार्थना, द्वार,पेड़,मिस्त्री
6. मत्ती 8:1-34	चंगाई, अनुसरण करने की कीमत
7. मत्ती 9:1-38	चंगाई, बुलाहट,उपवास,प्रार्थना
8. मत्ती 11:1-30	चमत्कार, राज्य, थके मांदों के लिए विश्राम
9. मत्ती 12:1-50	सबत, दास, राज्य,परिवार
10. मत्ती 13:24-51	दृष्टान्त
11. मत्ती 15:1-20	शुद्ध व अशुद्ध
12. मत्ती 18:1-35	दृष्टान्त
13. मत्ती 19:1-30	विवाह,बच्चे,धनी लोग
14. मत्ती 20:1-28	दृष्टान्त,मृत्यु,अगुवाई
15. मत्ती 21:28-46	दृष्टान्त
16. मत्ती 22:1-40	दृष्टान्त,सरकार, विवाह, प्रेम
17. मत्ती 23:1-39	कपटी
18. मत्ती 24:1-51	दूसरा आगमन
19. मत्ती 25:1-46	दूसरा आगमन, अन्तिम न्याय
20. मत्ती 26:31-75	संघर्ष, गिरफ्तारी, आरोप
21. मत्ती 27:1-66	आरोप,क्रूसीकरण, दफन
22. मत्ती 28:1-20	पुनरूत्थान, महान आज्ञा ।

1. मरकुस 1:1-45	शक्तिशाली+आत्मिक,परमेश्वर+परखा गया, निर्भर+तरस खाने वाला
2. मरकुस 2:1-27	अधिकार, बीमार+ स्वस्थ, पुराना +नया।
3. मरकुस 3:1-35	धार्मिक व्यवस्थाएं+मानवीय ज़रूरतें,बुरी आत्माएं+पवित्र आत्मा, जमीनी परिवार+ परमेश्वर का परिवार।
4. मरकुस 4:35 - 5:43	प्रकृति पर, दुष्टात्माओं पर,असाध्य रोग व मृत्यु।
5. मरकुस 10:1-52	तलाक,बच्चे, धनी,अगुवे व उसका क्रूसीकरण।
6. मरकुस 15:1-47	आरोप, अस्वीकार करना, क्रूसीकरण, दफनाया जाना ।

1. यूहन्ना 1:1-51	यीशु मसीह का पूर्व–अस्तित्व,चेलों का बुलाया जाना
2. यूहन्ना 2:1-23	विवाह,मन्दिर
3. यूहन्ना 3:1-21	नया जन्म,उद्धार, दण्ड
4. यूहन्ना 4:1-42	पवित्र आत्मा + आत्मिक आराधना
5. यूहन्ना 5:1-47	परमेश्वर के साथ उसके सम्बन्धों को दावा+यीशु मसीह के बारे में गवाहियां।
6. यूहन्ना 6:1-15,25-72	खराब होने वाली रोटी+ अनन्तकाल तक बनी रहने वाली रोटी।
7. यूहन्ना 8:1-59	यीशु मसीह के दावे
8. यूहन्ना 9:1-41	शारीरिक व आत्मिक अंधापन
9. यूहन्ना 10:1-39	चरवाहा व भेड़ें
10. यूहन्ना 11:1-57	चमत्कार +सताव

11. यूहन्ना 12:1-50	मृत्यु का अनुमान+ यहूदियों को अविश्वास
12. यूहन्ना 13:1-38	विश्वासघात व इनकार के बारे में पहले बताना
13. यूहन्ना 14:1-27	यीशु मसीह की घोषणा+ पवित्र आत्मा
14. यूहन्ना 15:1-27	दाख व उसकी शाखाएं, दुनिया की नफरत।
15. यूहन्ना 17:1-26	यीशु की प्रार्थना
16. यूहन्ना 18:1-40	गिरफ्तारी व आरोप
17. यूहन्ना 19:1-42	सज़ा, क्रूसीकरण व दफनाया जाना
18. यूहन्ना 20:1-31	पुनरूत्थान, लोगों पर प्रगट करना ।

1. यशायाह 52:13 - 53:12	यीशु मसीह की निन्दा,कष्टों + विजय के बारे में भाविष्यद्वाणी।
2. रोमियों 3:9-31	धार्मिकता की जरूरत +विश्वास के द्वारा धार्मिकता।
3. इफिसियों 2:1-10	पाप में मृतक+मसीह में होकर जीवित
4. प्रेरितों 1:1-11, 1 थिस्लुनिकियों 4:13 - 5:11	स्वर्गारोहण + दूसरा आगमन
5. कुलुस्सियों 1:15-23, 2:9-15	यीशु मसीह की श्रेष्ठता
6. प्रकाशितवाक्य 20:11 - 21:8, 21:22 - 22: 6	अन्तिम न्याय+नई धरती व नया स्वर्ग।

घ. खोजबीन करने वाले समूह के कार्यक्रम का उदाहरण

नीचे एक खोजबीन करने वाले समूह के कार्यक्रम का उदाहरण दिया गया है।

1.परिचय।

हर एक मसीही अपने गैर मसीही दोस्त के साथ ही बैठे। *बताएं कि खोजबीन करने वाले समूह का लक्ष्य बाइबल में से परमेश्वर,मनुष्य और जीवन से सम्बन्धित सत्यों की खोज करना है।*

2.पढ़ना

बाइबल में से एक अध्याय या अनुच्छेद को दो बार पढ़ें। एक ही बाइबल अनुवाद का इस्तेमाल करें या फिर उस अनुच्छेद को फोटो कौपी करवा लें। पहले मत्ती 9:1-38 को एक साथ मिलकर पढ़ें, घेरे में बैठा प्रत्येक व्यक्ति बारी बारी करके एक एक पद पढ़े। फिर सारे लोगं चुपचाप अपने मन ही मन में मत्ती 9:1-38 को पढ़े।

3. प्रश्न

समूह का अगुवा चार प्रमुख प्रश्नों को तैयार करे।

- प्रश्न 1. यीशु मसीह किस प्रकार से लोगों में अपनी रूची दिखाता है?
- प्रश्न 2. लकुवा मारे हुए व्यक्ति को चंगा करने में यीशु मसीह के व्यक्तित्व का कौन सा पहलू प्रदर्शित हुआ?
- प्रश्न 3. यीशु मसीह ने जब कहा कि "खेत तो पके हुए हैं परन्तु मज़दूर थोड़े हैं" तो उसका क्या अर्थ था (मत्ती 9:37)?
- प्रश्न 4. भिन्न लोगों के किस प्रकार इस अध्याय में यीशु को प्रतिउत्तर दिया?

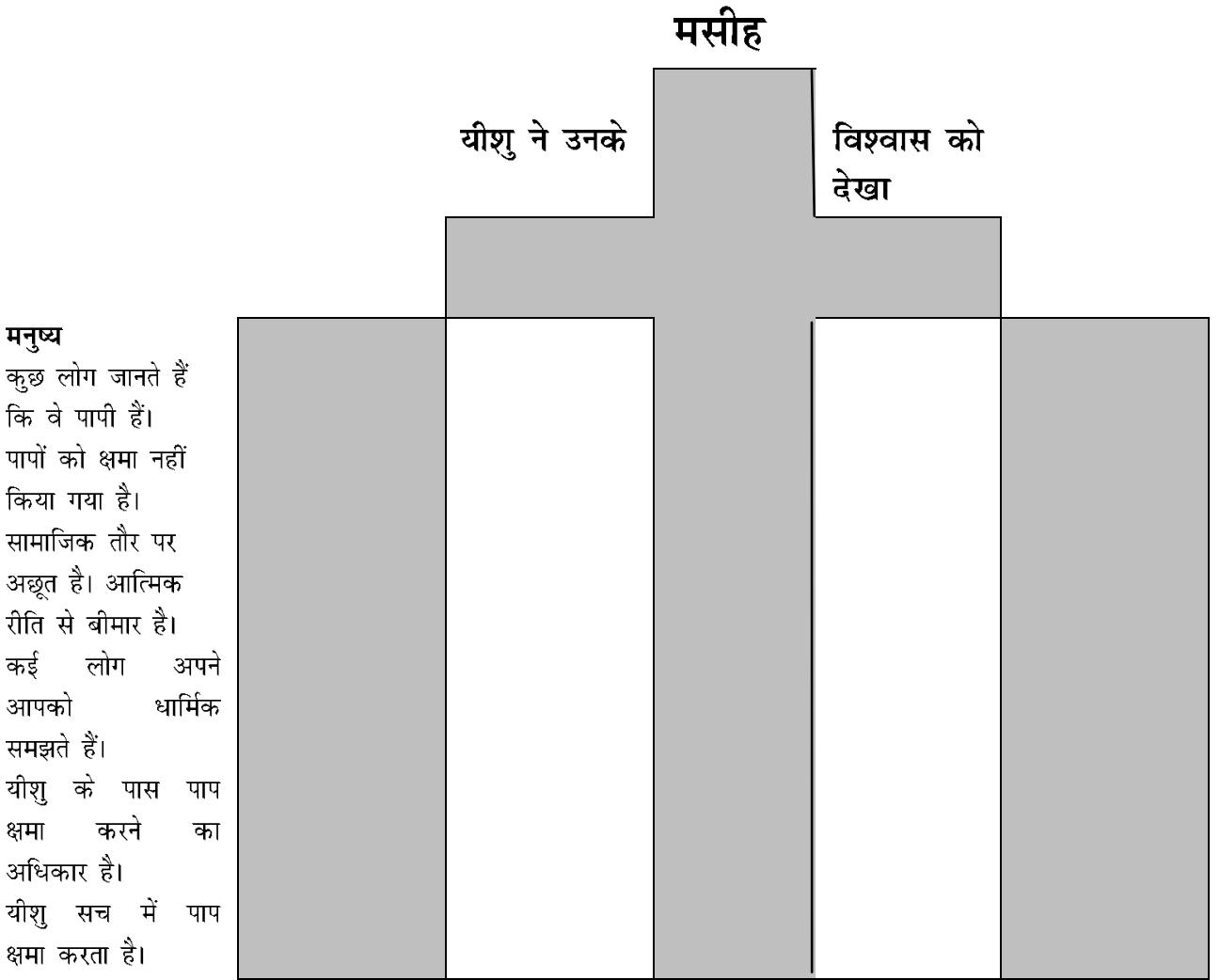
प्रत्येक प्रश्न को पूरे समूह में चर्चा करने से पहले अपने मसीही या गैर मसीह मित्र के साथ मिलकर प्रश्न पर पाँच मिनट तक चर्चा करें।

4. चर्चा ।

छोटे समूह में की गयी खोज को सारे लोगों के साथ बांटें व चर्चा करें। प्रश्न का स्पष्टीकरण सम्पूण समूह के सामने करने का प्रयास करें। प्रत्येक प्रश्न व उसकी चर्चा के लिए 10 मिनट का इस्तेमाल किया जा सकता है।

5. साराशं

प्रत्येक प्रमुख प्रश्न व उसकी चर्चा के अन्त में, समूह के सदस्यों के अनेक दृष्टिकोणों की सहायता से एक वाक्य में सार बताएं। खोजबीन की सामुहिक सभा के अन्त में,दृष्टान्त के द्वारा खोजों को वर्णन करें, जो खोज मत्ती 91:38 में पायी जाने वाली सच्चाई को बयान करती है। नीचे मत्ती 9:1-38 में पाये जाने वाले दृष्टान्त का सार दिया गया है।



वह वास्तव में बेसहारा लोगों को सहारा देता है।
वह वास्तव में बीमारों को चंगा करता है।
वह वास्तव में मृतकों को जीवित करता है।

परमेश्वर के नये जीवन के लिए नये हृदय की जरूरत होती है।
यीशु ने पूछा"क्या तू विश्वास करता है कि मैं इन कामों को कर सकता हूँ"?

इसके पश्चात सारे लोगों के अगले खोजबीन करने बाले समूह में बुलाएं।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रियाएं]*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज सीखी गयी सभी बातों के आधार पर परमेश्वर को प्रतिउत्तर देते हुए समूह में छोटी प्रार्थना करें।
या समूह को दो दो या तीन के समूह में बांट लें और फिर सीखी गयी बातों के आधार पर प्रतिउत्तर देते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ मिलकर " खोजबीन करने वाले समूह" की शिक्षाओं के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें। प्रार्थना करके निर्णय ले कि क्या आपकों वास्तव में कुछ गैर मसीहियों के साथ मिलकर समूह को आरम्भ करना चाहिए।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: उत्पत्ति यहोशू 5:13- 8:35 के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. बाइबल अध्ययन। घर में ही अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। 1 तीमुथीयुस 6:3-19। शीर्षक: संसार में धन। बाइबल अध्ययन में दिये गये पाँच कदमों को इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।